अजायब बानी

मासिक पत्रिका
जुलाई–2023

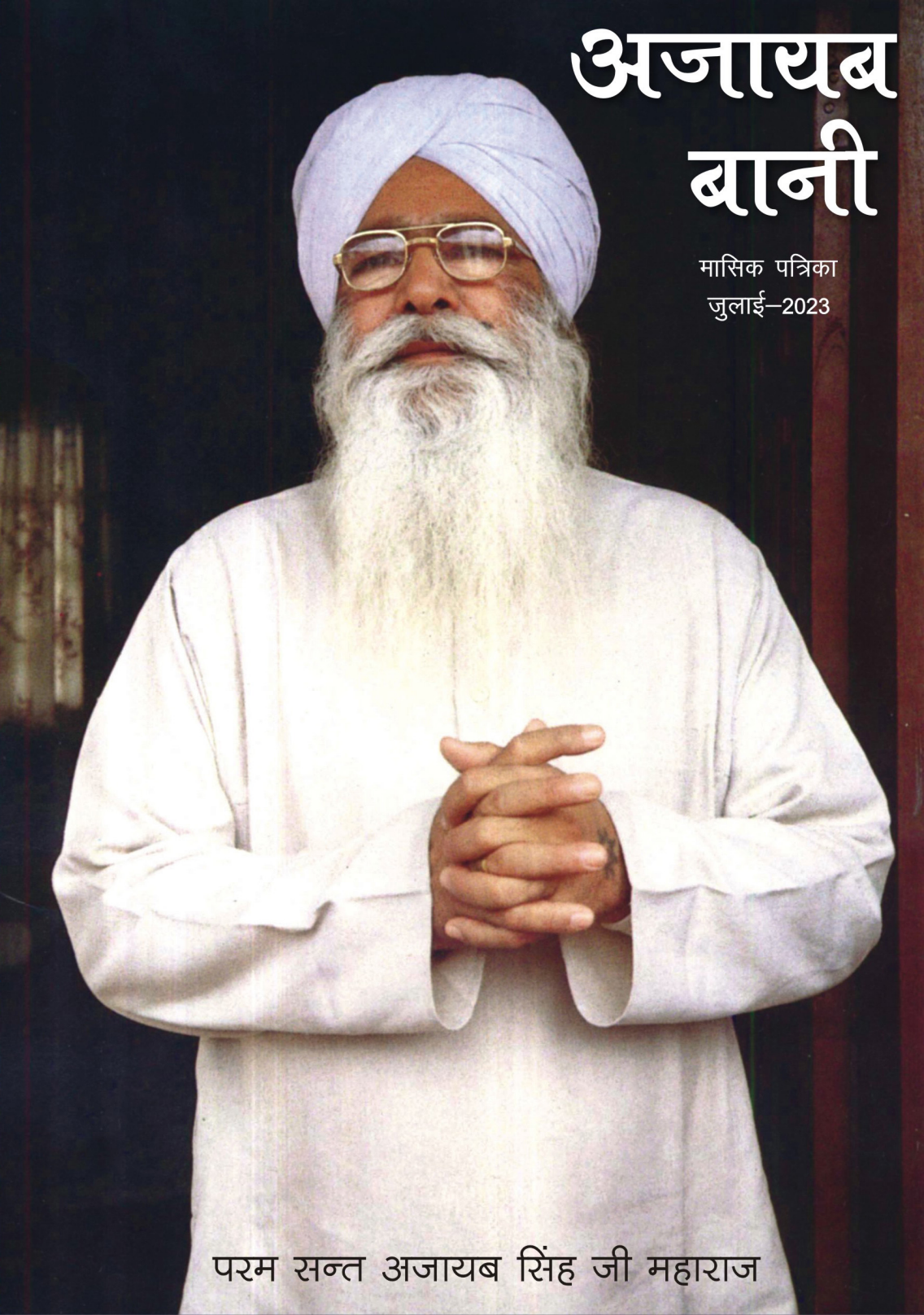

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–इक्कीसवां	अंक–तीसरा	जुलाई–2023

4 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले
भजन-अभ्यास

5 सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
नामु मिलै मनु तृपतीऐ

13 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
सवाल-जवाब

23 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से
एक संदेश

29 सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
वेश

34 एक शब्द
दाता जी कित्थे गयों

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** ने पोलिकाम ऑफसेट, नारायणा, फेस–1, नई दिल्ली–110 028 से छपवाकर सन्त बानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335039 जिला–श्रीगंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। 99 50 55 66 71

विशेष सलाहकार – **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

उप संपादक – **नन्दनी** सहयोग – **डॉ. सुखराम सिंह नौरिया**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 256 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

भजन-अभ्यास

जनवरी 1982 मुम्बई, महाराष्ट्र

हाँ भाई,

अभ्यास पर बैठने से पहले चाहे आप यहाँ बैठते हैं या घर पर बैठते हैं, हर सतसंगी को तीन–चार बातों का ख्याल जरूर रखना चाहिए। हमारे

मन में दुनिया के जितने भी ख्याल और संकल्प–विकल्प उठते हैं, उन्हें शांत करना बहुत ज़रूरी है क्योंकि शांत मन ही अभ्यास कर सकता है। हम प्रेम–प्यार से कोई भी काम करें, उस पर मालिक खुश होता है। इस संसार में हर आदमी अपना–अपना काम कर रहा है, अभ्यास में बैठते वक्त हमें किसी के काम की तरफ़ गौर नहीं करना चाहिए।

आपको पता ही है कि यहाँ शहर में पल–पल गाड़ियां निकलती हैं और भी काफ़ी शोरगुल होता है लेकिन हमने तो अपना काम करना है। आपने अपना ख्याल अभ्यास और सिमरन में देना है। प्रेमी आदमी भीड़–भाड़ में भी एकांत बना लेता है। गुरु नानक देव जी का वाक है:

सो एकांत विसरै दा थाऐं।

***

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

नामु मिलै मनु तृपतीऐ

23 जून 1980 मियामी, फ्लोरिडा गुरु रामदास जी की बानी

सतसंग शुरू करने से पहले मैं सब भाई–बहनों का धन्यवाद करता हूं जो स्वागत के लिए एयरपोर्ट पहुंचे। इस टूर में मैं जहां भी जा रहा हूं, हर जगह मुझे बहुत प्यार मिल रहा है। काल के जाल से ज्यादा आत्माऐं निकल रही हैं, पिछले साल से प्रेमियों में नामदान लेने के लिए ज्यादा तड़प हैं। अमेरिका की संगत से मुझे जो प्यार महसूस हुआ है वह प्यार प्राप्त करके बहुत खुश हूं। मैं आप सबका धन्यवादी हूं कि आप लोग अपना कारोबार छोड़कर प्रभु परमात्मा की याद में फिर से इकट्ठे बैठे हैं।

परमात्मा ने दया–मेहर की, वे कृपाल का तन धारण करके इस संसार में आए, उन्होंने हम सबको इकट्ठा करके बिठाया और अपने घर का निमंत्रण दिया। अब हमारा फर्ज बनता है कि परमात्मा कृपाल का संदेश प्राप्त करके हम ज्यादा से ज्यादा भजन–अभ्यास करें, मन–माया के जाल में न फंसे, आपस में प्रेम–प्यार बनाकर उनका प्यार प्राप्त करें।

नामु मिलै मनु तृपतीऐ बिनु नामै धृगु जीवासु।।

यह गुरु रामदास जी महाराज की बानी है। दुनिया ने शांति और तृप्ति के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी, बड़े यत्न किए, ग्रंथ–पोथियां पढ़ी, जप–तप, पूजा–पाठ किए कि कहीं से तृप्ति मिल जाए लेकिन तृप्ति मिलने की बजाए आग और भड़क उठती है।

अर्जुन, कृष्ण भगवान का भक्त था उसके दिल में अहंकार आया कि मेरे जैसा कोई भक्त नहीं है। अर्जुन ने कृष्ण भगवान से पूछा, ''महाराज, कोई मुझसे भी बड़ा भक्त है?'' कृष्ण भगवान चुप रहे। उनके दिल में

ख्याल आया कि इसके अंदर अहंकार आ गया है, इस अहंकार को किस तरह दूर किया जाए? कृष्ण, अर्जुन को राजा मोरध्वज के पास ले गए और कहने लगे, ''हमारा शेर भूखा है, यह उस इंसान का मांस मांग रहा है जो अपने माता–पिता का इकलौता लड़का हो। माता–पिता अपने लड़के को चीरकर इस शेर के सामने डालें लेकिन शर्त यह है कि उनकी आंखों से पानी न गिरे, वे रोए नहीं तो ही हमारा शेर खाएगा और तृप्त होगा।''

राजा के दिल में ख्याल आया कि इसमें क्या मुश्किल है। उसने वहां बैठे अपने अहलकारों से कहा कि जिनके इकलौता लड़का है, माता–पिता उसे चीर के खिलाएं और वे रोए नहीं लेकिन कोई भी अपना लड़का देने के लिए तैयार नहीं हुआ। आखिर राजा के दिल में ख्याल आया कि मेरा भी इकलौता लड़का है। एक तरफ से रानी ने आरा पकड़ा, दूसरी तरफ से राजा ने आरा पकड़ा। जब चीरने लगे तो रानी की आंखों से पानी गिरा। कृष्ण भगवान कहने लगे, ''अब हमारा शेर यह खाकर तृप्त नहीं होगा क्योंकि आप दान नहीं कर रहे, आप तो रो रहे हैं।''

राजा मोरध्वज ने कहा, ''महाराज, जब बेल से कच्चा फल तोड़ते हैं तो पानी स्वभाविक ही निकल आता है। इसी तरह यह बच्चा है, माता बेल है, उसे तोड़ने पर इसकी आंखों से पानी निकल रहा है।'' कहने का भाव चाहे इंसान अपना बच्चा चीर दे, कुछ भी कर ले लेकिन बाहर के किसी भी साधन से शांति नहीं। शांति नाम में है, नाम सतगुरु से मिलता है।

कोई गुरमुखि सजणु जे मिलै मै दसे प्रभु गुणतासु।।

गुरु रामदास जी कहते हैं, ''शांति नाम में है। नाम के बिना हमारा जीवन फीका और खुश्क है, इसमें कोई खुशी नहीं है। कोई गुरुमुख सज्जन मिल जाए तो वही हमें नाम के रास्ते पर डाल सकता है।''

सतगुरु की सेव ना किनिओ नाम ना लगो प्यार।
मत जानो तुम ओ जीवदे ओ जान मारे करतार।।

हउ तिसु विटहु चउ खंनीऐ मै नाम करे परगासु।।

आप कहते हैं, ''मैं उस सतगुरु पर कुर्बान जाता हूं जिसने मेरे अंदर नाम का प्रकाश किया है और कण–कण में व्यापक ज्योति के साथ जोड़ा है।'' गुरु साहब बताते हैं कि सन्त हमें कोई ज्यादा पढ़ा–लिखा, धनी या समझदार होने के कारण नाम की रोज़ी–रोटी की बक्शीश नहीं करते।

जिस तरह कुत्ते दर–दर भूखे फिरते हैं, साहूकार को दया आती है कि ये बेचारे कभी किसी द्वार पर तो कभी किसी द्वार पर फिरते हैं। साहूकार उन लावारिस कुत्तों को रोटियां डालते हैं। उसी तरह हम जीवों की यही हालत है, हम कभी पशु बनते हैं, कभी पक्षी बनते हैं, कभी कहीं जन्म लेते हैं तो कभी कहीं जन्म लेते हैं। जब हम सन्त–महात्माओं के द्वार पर आ जाते हैं तो वे हमें एक तुच्छ जानवर समझकर 'नाम' की रोटी डालते हैं। इस संसार से हमारे साथ जाने वाला नाम ही है। हम उस नाम को पाकर तृप्त हो जाते हैं, हमें शान्ति आ जाती है। पल्टू साहब कहते हैंः

वे है वाक्फकार नाम को वे ही मिलावे।

मेरे प्रीतमा हउ जीवा नामु धिआइ।।

कुम्हार को हीरा मिल जाए तो वह गधे के गले में डाल देता है अगर वही हीरा जौहरी को मिल जाए तो वह उसकी कद्र करता है, उसे सिर पर उठाता है, अलमारी या तिजोरी में रखता है क्योंकि जौहरी को हीरे की कद्र होती है, कुम्हार को हीरे की कद्र नहीं होती। इसी तरह अगर प्रेमी आत्मा को नाम मिल जाता है तो वह उस नाम की बहुत कद्र करता है। वह नाम जपता है और सतगुरु की कद्र करता है कि शुक्र है, इन्होंने मुझे नाम के साथ जोड़ा है।

गुरु नानक देव जी से मरदाना ने पूछा, ''यह कैसे हो सकता है कि हीरा हो और इंसान उसे न परखे?'' गुरु नानक देव जी ने कहा, ''मरदाना, हीरे को कोई–कोई परखता है।'' मरदाना को भूख लगी थी,

गुरु नानक देव जी ने उसे एक हीरा देकर कहा, ''तुम इसे देकर रोटी खा आओ।'' वह कई दुकानों पर गया लेकिन किसी ने उस हीरे को नहीं पहचाना, सबने यही कहा कि हमने इस पत्थर का क्या करना है? आखिर मरदाना ने गुरु नानक देव जी के पास आकर कहा, ''अगर आप मुझे पैसे देते तो ही लोग मुझे खाना देते, इस पत्थर को कौन लेता है?''

उस शहर में सालस नाम का एक जौहरी था, गुरु नानक देव जी ने मरदाना को उसके पास भेजा। सालस जौहरी ने मरदाना की तरफ देखा कि यह एक बहुत छोटा–सा आदमी मालूम होता है लेकिन जब हीरे की तरफ देखा कि यह बहुत कीमती हीरा है, इसके हाथ कहां से लगा। उसने मरदाना से पूछा, ''तुम्हें यह हीरा कहां से मिला है? मैं इस हीरे का मूल्य तो नहीं दे सकता सिर्फ इसका नजराना सौ रूपए दे सकता हूं।'' मरदाना ने कहा, ''यह हीरा मुझे मेरे गुरु ने दिया है।'' सालस जौहरी गुरु नानक देव जी के पास आया और उसने नाम प्राप्त किया। गुरु नानक देव जी ने उसे अपना प्रतिनिधि बनाया और हुक्म दिया कि तू जिसे भी नाम देगा मैं उसकी संभाल करूंगा।

कहने का भाव इतना ही है कि नाम की कद्र भी थोड़े से ही आदमी करते हैं बाकी सबके अंदर नाम लेकर भी उसी तरह काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार होता है। जब हमें नाम मिल गया है तो हमें चाहिए कि हम नाम की कमाई करें, हमारे अंदर शांति जरूर आएगी।

इतिहास गवाह है कि गुरु गोबिन्द सिंह जी के साथ गंगू ब्राह्मण बाईस साल रहा लेकिन धन के लोभ में आकर उसने गुरु गोबिन्द सिंह जी की माता और उनके बच्चों को पुलिस के हवाले कर दिया। इसी तरह क्राइस्ट को पकड़वाने में उनका एक सेवक ही शामिल था। जरा सोचकर देख लें, वे भी शिष्य थे जो गुरु गोबिन्द सिंह या क्राइस्ट की खातिर अपनी जान कुर्बान करते थे, उन्हें कुल मालिक समझते थे, उनकी इज्जत करते थे

और वे भी उनके ही शिष्य थे जिन्होंने उनके साथ बुराई की। हर आदमी महात्मा और नाम रूपी हीरे को पहचान नहीं सकता।

बिनु नावै जीवणु ना थीऐ मेरे सतिगुर नामु दृड़ाइ।।

परमात्मा समुन्द्र हैं, शब्द उसकी लहर है और आत्मा बूंद है। जब तक आत्मा हमारे शरीर में ठहरी हुई है, हमारा जीवन है। जब इसमें से आत्मा उड़ जाती है तो हमारा जीवन समाप्त हो जाता है।

नामु अमोलकु रतनु है पूरे सतिगुर पासि।।

आप कहते हैं, ''नाम अमोलक रत्न है लेकिन यह पूरे सतगुरु के पास है। जो सतगुरु के कहे मुताबिक 'शब्द–नाम' का अभ्यास करते हैं वे उनके आगे यह रत्न निकालकर रख देते हैं कि यह तेरी जायदाद है, तेरे लिए है। जिस तरह पिता अपने बच्चों के लिए धन–पदार्थ इकट्ठा करता है, अच्छा मकान, अच्छी जायदाद बनाता है उसी तरह सतगुरु अपने सेवकों, शिष्यों के लिए नाम की कमाई करते हैं और वे अपने कमाए हुए नाम में से जीवों को नाम की कणी बक्शते हैं। गुरु साहब कहते हैं:

गुरमुख कोट उधारदा भाई दे नावै एक कणी।

कबीर साहब कहते हैं:

जैसे लौ पहले लगी तैसी निभ है ओड़ ।
अपनी देह की क्या गत तारे पुरुष करोड़ ।।

सतिगुर सेवै लगिआ कढि रतनु देवै परगासि।
धंनु वडभागी वड भागीआ जो आइ मिले गुर पासि।।

वैसे तो हम सारे ही अपनी जगह कहते हैं कि हमारे अच्छे भाग्य हैं, हमारे घर औलाद पैदा हुई है, हमें जायदाद मिल गई है, हमने कारोबार में अच्छी तरक्की की है, परमात्मा ने हम पर बहुत दया की है। गुरु रामदास जी कहते हैं कि सबसे अच्छे भाग्य उनके हैं जो इंसानी जामे में सतगुरु के

पास आकर बैठ जाते हैं, उनकी संगत में घुल–मिल जाते हैं, उनसे नाम प्राप्त कर लेते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

नाम जपत कोढ़ी भला चौ–चौ पए जिस चाम।
कंचन देह किस काम है जे मुख नाही नाम।।

गुरु साहब कहते हैं:

अत सुंदर कुलीन चतुर मुख ज्ञानी धनवंत ।
मिरतक कहिए नानका जे प्रीत नही भगवंत ।।

जिना सतिगुरु पुरखु न भेटिओ से भागहीण वसि काल।।

दो ही रास्ते हैं, हमारी आत्मा जहां से बिछुड़ी थी अगर गुरु मिल जाएं तो हम अपनी आत्मा को परमात्मा में मिला लेते हैं अगर गुरु नहीं मिलते तो काल हमारी मरम्मत करता है। हम काल के जाल में फंस जाते हैं, काल हमें कर्मों के मुताबिक जन्म दे देता है। बुरे कर्मों की सजा–बीमारी, बेरोजगारी है। अच्छे कर्मों का इनाम–तंदुरूस्ती, अच्छे घर में जन्म होना, धनी होना और कोई बड़ा ओहदा मिल जाना है।

काल किसी हद तक स्वर्ग–बैकुंठ भी देता है। स्वर्ग में जो रूहें आबाद हैं, वे भी इंसानी जामे को तरसती हैं कि काश! हमें भी इंसानी जामा मिले, हम भी गुरु भक्ति और नाम की कमाई कर सकें। कबीर साहब कहते हैं:

इस देही को सिमरे देव, सा देही भज हर की सेव ।
भजो गोबिन्द भूल मत जाओ, मानस जनम का ऐही लाओ।।

ओइ फिरि फिरि जोनि भवाईअहि विचि विसटा करि विकराल।।

गुरु रामदास कहते हैं, ''जिन्हें नाम नहीं मिला होता, जो सतगुरु के पास नहीं जाते काल उन्हें यह सजा देता है बार–बार योनियों में भेजता है। उन्हें बिष्टा के कीड़े तक बनना पड़ता है।'' कबीर साहब कहते हैं:

असथावर जंगम कीट पतंगा, अनक जनम कीए बहुरंगा।
ऐसे घर हम बहुत बसाए, जब हम राम गर्भ होए आए।।

गुरु साहब भी कहते हैं :

लख चौरासी भ्रमतिआ दुलभ जनम पाइ।
नानक नाम समाल तूँ सो दिन नेड़े आया।।

ओना पासि दुआसि न भिटीऐ जिन अंतरि क्रोधु चंडाल।
सतिगुरु पुरखु अंमृत सरु वडभागी नावहि आइ।।

काल ने इंसान बनाकर, इंसान के अंदर पांच डाकू–काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार रख दिए हैं, ये इंसान को अंदर से ही परेशान किए रखते हैं। इनमें काम और क्रोध दो जबरदस्त ताकतें हैं। काम से रूह गिर जाती है और क्रोध से फैल जाती है। कबीर साहब कहते हैं, ''कामी, क्रोधी और लालची भक्ति नहीं कर सकते।''

कामी क्रोधी लालची इनसे भगत ना होए ।
भक्ति करे कोई सूरमा जात वर्ण कुल खोए ।।

गुरु साहब कहते हैं, ''हमारे मन पर सोहबत का असर बहुत जल्दी होता है इसलिए हमें हमेशा ऐसे आदमी की सोहबत करनी चाहिए जो नाम में रंगा हुआ है, नाम से जुड़ा हुआ है। हमारी आत्मा पर पहले स्थूल पर्दा है, उसके अंदर सूक्ष्म पर्दा है और उसके अंदर कारन पर्दा है। सतोगुण, तमोगुण और रजोगुण हैं। जब हम इनसे ऊपर चले जाते हैं, अपनी आत्मा को पारब्रह्म–अमृतसर में ले जाते हैं, तब इसके ऊपर से सारे पर्दे उतर जाते हैं। वे बहुत भाग्यशाली हैं जो उस सरोवर में जाकर स्नान करते हैं।''

उन जनम जनम की मैलु उतरै निरमल नामु दृड़ाइ।।

आप कहते हैं कि उस अमृतसर में नहाने से हमारी आत्मा को जन्म–जन्मांतरों से लगी हुई मैल उतर जाती है, आत्मा प्योर और पवित्र हो जाती है। हमारी आत्मा तो प्योर और पवित्र ही थी लेकिन मन का साथ लेकर अति गंदी और मैली हो गई थी। यह आत्मा अपने–आपको, अपने घर को, अपनी असलियत को भूल गई थी।

समुन्द्र से पानी भाप बनकर उड़ता है जब बारिश बनकर जमीन पर नदी–नालियों और कीचड़ में मिल जाता है तो उसमें से बदबू आनी शुरू हो जाती है। पानी अपने आपको गंदगी समझने लगता है, जब फिर उसे सूरज की तपिश मिलती है, वह भाप बनकर उड़ता है और सीधा बादलों में जाकर समा जाता है। तब उस पानी को पता चलता है कि गंदगी कोई और चीज़ थी, मैं कोई और चीज़ था।

इसी तरह हमारी आत्मा जब मन का साथ छोड़कर उस 'शब्द' के साथ जुड़ जाती है तब इसे पता चलता है कि मैं इंद्रियों के भोगों में, मन के साथ ऐसे ही फंसी रही, मैं तो प्योर और पवित्र थी।

जन नानक उतम पदु पाइआ सतिगुर की लिव लाइ।।

आपने जहां से शब्द शुरू किया था वहीं आकर समाप्त करते हैं। आपने कहा था कि शांति नाम में है, नाम सतगुरु से मिलता है। आप आखिर में कहते हैं, ''जो सतगुरु से प्यार करते हैं, 'शब्द–नाम' की कमाई करते हैं उन्हें उत्तम पद सच्चखंड मिल जाता है।'' ***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

27 फरवरी 1985 16 पी.एस. राजस्थान

एक प्रेमीः *– मुझे ऐसा महसूस होता है कि हम दूसरे आदमियों की निन्दा तभी करते हैं जब हम अपने अंदर हीन भावना महसूस करते हैं और हम अपने आपको सही साबित करने के लिए दूसरों को गलत साबित करते हैं। अगर हम अपने आपसे प्यार करना सीखें और अपनी कमजोरियों को स्वीकार करना सीखें तभी हम दूसरों से प्यार कर सकेंगे और दूसरों को स्वीकार कर सकेंगे, तभी हम आपसे प्यार कर सकेंगे। क्या मेरा ऐसा सोचना ठीक है?*

बाबा जीः हाँ, आपका यह सोचना ठीक है। सेवक उसी वक्त दूसरे आदमियों की निन्दा आलोचना करता है जब वह अपनी कमजोरी छिपाना चाहता है, उससे दूसरों की बड़ाई सहन नहीं होती। हमेशा कमजोर दिल आदमी ही दूसरों की निन्दा आलोचना करता है। जो लोग किसी की निन्दा करते हैं वे अपने परमार्थ का बहुत बड़ा नुकसान कर रहे होते हैं।

सुखमनी साहब – *खुशियों का खजाना* की एक अष्टपदी में निन्दा पर खास रोशनी डाली गई है। मैंने राग गौउड़ी पर बहुत सारे सतसंग किए हैं उस पर भी किताब छपकर तैयार हो जाएगी, उसमें भी निन्दा के मुत्तलिक बहुत कुछ बोला गया है। आप इन किताबों को पढ़ें और विचारें, इससे आप लोगों को बहुत मदद मिलेगी।

जो आदमी पूरा है, मजबूत है सतगुरु को प्रकट कर लेता है वह न तो खुद ही किसी की आलोचना करता है न ही अपने सेवकों को इस बीमारी के नजदीक आने देता है क्योंकि यह परमार्थ के लिए घाटेमंद बीमारी है।

निन्दा में कोई रस नहीं, कोई स्वाद नहीं अगर कोई थोड़ा बहुत भी अंदर जाता है, तीसरे तिल पर एकाग्र होता है तो वह भी सहज अवस्था धारण कर लेता है। स्वाभाविक ही ऐसा मन बना लेता है कि वह किसी की निन्दा की परवाह नहीं करता और न ही प्रशंसा की परवाह करता है। प्रशंसा उसकी खुशी का कारण नहीं बनती और निन्दा उदासीनता का कारण नहीं बनती। उसे अपने गुरुदेव के ऊपर अटल विश्वास होता है कि उनके हुक्म के बिना पत्ता तक नहीं हिल सकता। जो कुछ है हुक्म में ही है। वह अपने गुरुदेव का भरोसा और प्यार लेकर चलता है।

एक प्रेमी: *– हमें अपने आपको प्यार भरा स्वीकार करना चाहिए तभी हम अपने अंदर प्यार पैदा कर सकते हैं और आपके साथ प्यार कर सकते हैं। आपने भी कहा है कि यह बहुत लम्बा संघर्ष है, इसमें काफी समय लग जाता है। जब तक हम प्यार करने के संघर्ष को जारी रखते हैं और कामयाब होते हैं तो इस दौरान हमारे पिछले कर्मों के हिसाब–किताब की वजह से कई बुराईयां भी हैं जिनके साथ हम जी रहे हैं, हमारा उन बुराईयों के प्रति क्या व्यवहार होना चाहिए?*

बाबा जी:– बुराई भी हमारे अंदर है और अच्छाई भी हमारे अंदर है। अब हमने रास्ता चुनना है कि हमारे लिए कौन सा रास्ता ठीक है। हम बुराई को चुनकर कामयाब नहीं हो सकते बल्कि हम कर्मों का और बोझ अपने सिर पर भारी कर लेते हैं। क्यों न नाम के मार्ग पर चला जाए? मन मार्ग में हमारी आत्मा तीसरे तिल से नीचे इन्द्रियों के घाट पर आ जाती है। जब हम गुरुमत पर चलते हैं तो यह इन्द्रियों का साथ छोड़कर तीसरे तिल पर एकाग्र होकर अपने घर का सफर शुरु करती है।

एक प्रेमी: *– आपने यह भी कहा है कि हमें गुरु के अलावा किसी की बड़ाई नहीं करनी चाहिए। जिस व्यक्ति में गुरु की तरफ से दिए गए अच्छे गुण व आदतें हों तो उसकी तारीफ करने से क्या नुकसान हो सकता है?*

बाबा जी:– देखो भई, बात यह है कि बड़ाई करते समय सबसे पहले हमें यह सोचना चाहिए कि हम दिखावे की या उसे खुश करने के लिए बड़ाई तो नहीं कर रहे? अगर हम उसे खुश करने के लिए बड़ाई करते हैं तो इसमें हमारा कोई लालच छिपा होता है। गुरु की सच्ची बड़ाई अंदर जाकर ही है, गुरु की शिक्षा पर चलकर ही है, गुरु की शिक्षा का पालन करना ही गुरु की सच्ची बड़ाई है।

वैसे हमें किसी समाज या जीव के प्रति बुरी भावना नहीं रखनी चाहिए, सबके साथ प्यार और आदर का व्यवहार होना बहुत जरूरी है। खासकर एक सतसंगी के लिए तो यह सबसे ज्यादा जरूरी है। सतसंगी को समाज और घर के प्रति एक उदाहरण बनकर पेश आना चाहिए। दूसरे लोगों को यह पता लगे कि यह किसी पूरे गुरु का शिष्य है, इसने अपने अंदर कितने गुण धारण किए हुए हैं। यह झूठ नहीं बोलता, सच बोलता है अपने दस नाखूनों से रोजी–रोटी कमाता है, उस पर अपना निर्वाह करता है।

एक प्रेमी:– *जब कोई आदमी किसी की निन्दा करे, जैसे कोई आदमी मेरी निन्दा करता है और मुझे किसी तीसरे आदमी के जरिए पता चलता है कि वह मेरी निन्दा करता है जबकि मैंने अपना दरवाजा खोल रखा है अगर वह चाहे तो मुझे खुद आकर बता सकता है लेकिन वह ऐसा नहीं करता तो क्या उस समय हमारी जिम्मेदारी है कि हम उसके पास चलकर जाएं और उससे बात करें या उसकी तरफ ध्यान न दें जैसे मैंने अपना रवैया किया हुआ है। मैंने अपनी बीवी से कह रखा है अगर कोई आदमी मेरे खाते में पैसे रखना चाहता है तो यह उसकी मर्जी है लेकिन मेरा उससे कोई लेन–देन नहीं है।*

बाबा जी:– ऐसे मौके पर खामोश रहने में ही फायदा है लेकिन हमारा दिल कमजोर और दिमाग छोटा है, हम जब किसी के जरिए ऐसी बात

सुनते हैं तो हम आपे से बाहर हो जाते हैं और उस समय हमारा खून भी ज्यादा तेजी से दौरा करता है। वह आदमी जो आपके पास आकर ऐसी हरकत करता है वही दूसरे आदमी को जाकर बताता है कि फलाना आदमी तुम्हारी आलोचना करता है।

याद रखें, जब आप बुरा लफ्ज बोलेंगे तो वह आदमी आपकी बात सुनकर उनके पास बात करेगा। जिन आदमियों को बात नहीं पचती वे दोनों तरफ ही फिरते हैं, अपने जीवन को खराब करने के लिए सारी जिंदगी उनका यही हाल होता है, वे इसकी बात उसके पास करते रहते हैं। अगर कोई तगड़ा या समझदार आदमी आपके पास आकर बात करता है कि फलाना आदमी तेरी आलोचना करता है तो आप उस समय सिमरन करें, गुरु का ध्यान करें। आप उस आदमी को प्यार से कह दें कि मैं तो उसके साथ प्यार करता हूँ। तू खामोश रह, मेरे पास आकर ऐसी हरकतें न कर। वह शर्मिन्दा होकर चला जाएगा और आपके ऊपर हमला नहीं करेगा।

एक प्रेमी:– *आपने उस दिन यह बताया था कि जिन आत्माओं को नामदान मिलना होता है उनका चुनाव धुरधाम में ही हो जाता है। क्या आप हमें बताएंगे कि किस आधार पर उनका चुनाव होता है?*

बाबा जी:– हाँ भई, सबसे पहले आप अपने कैमरे में रील डालें, आज आपको फोटो खींचने का मौका दिया जाएगा। सुखपाल ने आपकी काफी सारी फोटो खींच ली हैं, सुखपाल के पास भी आपके जैसा कैमरा है। जब बच्चा सोया होता है तो माता को लालच होता है कि मैं घर का कारोबार कर लूं, माता घर का काम करती रहती है। जब तक बच्चा सोया है माता बेफिक्र है, जब बच्चा माता के लिए रोता है उस समय माता के अंदर ममता होती है, प्यार होता है, हमदर्दी होती है बेशक वह कितना भी जरूरी काम कर रही हो उस काम को छोड़कर बच्चे को अपनी छाती से लगाती है और बच्चे की जरूरत को पूरा करती है। यह तो एक दुनियावी

मिसाल है जब हम परमात्मा की तरफ से सोए हुए हैं, परमात्मा को याद नहीं करते और इस दुनिया में विचरकर ही खुश रहते हैं तो परमात्मा भी हमारी तरफ से बेफिक्र है।

जब हम संसार के सुखों–दुखों से घबराकर इनकी असलियत को समझकर परमात्मा के आगे फरियाद करते हैं कि हे परमात्मा, तेरे बिना कोई हमारी मदद नहीं कर सकता, तू हमें अपने पास बुला, तूने हमें क्यों विसार दिया। हमें संसार में कितने भी सुख क्यों न मिल जाएं फिर भी हम परमात्मा को पुकारते जाएं जिस तरह पपीहा स्वाति बूँद के लिए पुकारता है तो परमात्मा से भी रहा नहीं जाता वह उस वक्त हमारा चुनाव करता है।

परमपिता कृपाल कहा करते थे, ''भूखे को रोटी प्यासे को पानी कुदरत का असूल है जरूर मिलता है।'' फिर परमात्मा हमें किसी ऐसी जगह भेजता है जिस पोल पर वह काम करता है। जिस तरह किसी पौधे पर उन्नत नसल की कलम लगाते हैं उसी तरह वे हमें शब्द–नाम की कलम लगा देते हैं। हमारी आत्मा दुनिया की तरफ से सोना शुरु कर देती है और परमात्मा की तरफ जागना शुरु कर देती है। इन कौमों–मजहबों से प्यार निकालकर परमात्मा की तरफ अपना प्यार बढ़ाना शुरु कर देती है।

मैं कई दफा अपने बचपन की कहानी सुनाया करता हूँ। उस समय मेरी बहुत छोटी अवस्था थी। पता नहीं वह ख्याल क्यों आया, आमतौर पर पाँच–छह साल के बच्चे को ऐसे ख्याल नहीं आते। मैंने अपने परिवार के सब मेंबरों की ढेरियां बना ली, हर एक से सवाल किया, ''क्या तू मौत के वक्त मेरी मदद करेगा?'' मुझे अंदर से जवाब मिलता कि हम तो खुद जन्म–मरण में लगे हुए हैं।

मुझे बचपन से जिस ताकत की खोज थी, मैं हमेशा उसके मुत्तलिक सोचता था कि मेरा कुछ खोया हुआ है, क्या कभी मुझे मिल जाएगा? मैंने पहले ढेरियां बनाई फिर गिरा दी और उस गैबी ताकत की एक ढेरी

रख ली। मेरे पिता जी सब कुछ देख रहे थे, उन्होंने पूछा कि तूने यह क्या किया? मैंने उन्हें अपने दिल का हाल खोलकर बताया। उन्हें नाराजगी महसूस हुई कि हम इसे अच्छी तरह पालते हैं, इसे सब कुछ खाने के लिए देते हैं फिर भी यह कहता है कि तुम मेरी रक्षा नहीं कर सकते। मेरी सोचनी बहुत ऊँची और गहराई में थी और मेरे पिता जी छोटा सा ख्याल सोच रहे थे। जब हम ऐसे ख्याल पैदा करते हैं तो कबीर साहब ने भी कहा हैः

ऊपर भुजा कर मैं गुर पहि पुकारिआ तिनि हउ लीआ उबारी।

मेरे दिल में भी तड़प हुई, दुनिया की तरफ देखा कि यहाँ का धन–दौलत, कुल–कुटुम्ब, बहन–भाई साथ नहीं जाते। हमारे जीते–जी ही बहन–भाई हमारा साथ छोड़ जाते हैं। उस समय मैंने उभारने वाला एक गुरु ही देखा, मैंने उसके आगे बाँहें करके पुकारा और उसने मेरी बाँह पकड़कर मुझे ऊपर खींच लिया। कहने का भाव **जब हम सारे सहारे छोड़कर परमात्मा को पुकारते हैं तो परमात्मा से भी नहीं रहा जाता, वह जरूर हमारी मदद करता है हमें अपने पास बुलाता है।**

एक प्रेमीः– *कई दफा जब मैं पूरे उत्साह के साथ इस काम को करने की, अभ्यास में बैठने और हुक्म का पालन करने की कोशिश करता हूँ तब मुझे यह अहसास होता है कि मैं आपके प्यार के लायक नहीं हूँ। यह सोच मेरे रास्ते में रूकावट बनती है और मैं आपसे मदद माँगने में कामयाब नहीं हो पाता क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं पहले ही आपके ऊपर बोझ हूँ और बोझ नहीं बनना चाहता। क्या आप इस बारे में कुछ बताएंगे?*

बाबा जीः– जब आप अभ्यास में बैठे थे, मैंने उस समय भी आपको बताया था कि कमजोर ख्याल, बुरा ख्याल इंसान को ब्रह्मांड की चोटी से नीचे ले आता है, यह मन की जीत होती है। आपको पता है जब हम प्यार प्राप्त करने के लिए गुरु के अभ्यास पर बैठते हैं तो हमारा दुश्मन मन हमारे अंदर बैठा है, वह फौरन हमारे ऊपर हमला कर देता है। आप जब

भी अभ्यास पर बैठें फौरन अपना सिमरन शुरु कर दें ताकि ऐसा ख्याल आपके अंदर आए ही नहीं।

सन्तमत कायरों का नहीं यह सूरमों का, बहादुरों का मत है। आप मजबूत होकर अभ्यास पर बैठें। मन के हाथ में खिलौना न बनें। सूरमें बहादुर बनकर मन के आगे डट जाएं। गुरु नानक देव जी महाराज इस वक्त के हालात को इस तरह बयान करते हैं कि जब सतसंगी इन पाँच जानी दुश्मनों के साथ लड़ता है तो वह कहता हैः

हो गोसाई दा पहलवानड़ा, मैं गुर मिल उच दुमालड़ा।
निहते पंज जुआन मै गुर थापी दिती कंड जिओ।।

वे पाँच हैं, सेवक अकेला है। गुरु सेवक के साथ है और गुरु सेवक को हल्ला–शेरी भी देता है। गुरु एक सेकिंड भी शिष्य के संघर्ष से पीछे नहीं हटता। सतसंगी को भूलकर भी यह नहीं सोचना चाहिए कि मैं अकेला हूँ। जो सेवक थोड़ा बहुत अंदर एकाग्र होते हैं उन्हें ज्ञान हो जाता है कि हमारे साथ परछाई की तरह कोई ताकत है।

मेरे पास सैकड़ों उदाहरण हैं। बहुत से सतसंगी किसी बेसतसंगी के साथ बात करते हैं तो वे बताते हैं कि हमें आपके पीछे कोई सफेद कपड़ों वाला बुजुर्ग नजर आया। मैं जब पहले टूर पर गया तो वहाँ बहुत से आदमियों ने कहा कि हमें आपके पीछे सफेद कपड़े पहने हुए दो बुजुर्ग खड़े नजर आते हैं। गुरु हमेशा सेवक के साथ है। गुरु नानक साहब कहते हैंः

गुरु मेरे संग सदा है नाले सिमर–सिमर तुध सदा संभाले।

सुल्तान महमूद गजनवी रात के समय भेष बदलकर अपनी प्रजा का हाल पता कर रहा था कि प्रजा मेरे बारे में क्या सोचती है? क्या प्रजा सुखी हैं या दुखी है? रास्ते में उसे चोर मिले। महमूद गजनवी ने उनसे पूछा कि तुम लोग कौन हो? उन्होंने कहा कि हम चोर हैं। चोरों ने सुल्तान से पूछा कि तू कौन है? सुल्तान ने कहा कि मैं भी चोर हूँ। सभी चोरी

की योजना बनाने लगे कि आज हम चोरी कहाँ करें? सबने सलाह की कि बादशाह के महल में चोरी की जाए लेकिन उससे पहले हमें अपने में से किसी एक को सरदार बनाना जरूरी है लेकिन सरदार उसे ही बनाया जाए जिसमें सबसे अच्छा गुण हो।

सबसे अलग–अलग पूछा गया कि तुझमें क्या गुण है? पहले आदमी ने कहा, ''मैं छत पर ऐसी कमंद लगाता हूँ कि वह पहली बार में ही लग जाती है, दोबारा रस्सा नहीं फैंकना पड़ता, चाहे कितने ही आदमी चढ़ जाएं वह हिलती नहीं।'' दूसरे आदमी ने कहा, ''मैं सूंघने में बहुत माहिर हूँ, मैं सूंघकर बता देता हूँ कि धन कहाँ दबा है।'' तीसरे आदमी ने कहा, ''मैं सेंध लगाने में बहुत माहिर हूँ। चाहे कोई बंदा नजदीक ही सोया हो उसे भी पता नहीं लगता की सेंध किसने लगाई है।'' चौथे आदमी ने कहा, ''मैं जानवरों की बोली समझ लेता हूँ।'' पाँचवें आदमी ने कहा, '' मैं रात के समय किसी को देख लूँ तो दिन में उसे पहचान लेता हूँ।''

बादशाह सोच रहा था कि मैं अपना क्या गुण बताऊ क्योंकि सबका सरदार वही बनेगा जिसमें अच्छे गुण होंगे। जब बादशाह की बारी आई तो बादशाह ने कहा, ''मेरी दाढ़ी में यह गुण है अगर मैं इसे हिला दूं तो चाहे कितने ही आदमी फाँसी पर चढ़ते हों, सब छूट जाते हैं।'' बादशाह का गुण सबको अच्छा लगा, उन्होंने कहा कि यह हम सबका सरदार हुआ।

वे खुशी–खुशी महल में चोरी करने गए, रास्ते में एक कुत्ता भौंका तो जानवरों की बोली समझने वाले ने कहा, ''कुत्ता कह रहा है कि तुममें एक बादशाह भी है।'' वे सारे कह–कहाकर हँस पड़े।

आगे जाकर उन्होंने बादशाह के महल में चोरी की। उस समय यह कानून था कि जब तक बादशाह वारंट पर दस्तखत न कर दे किसी आदमी को फाँसी नहीं दी जा सकती थी। वे जब बादशाह के सामने आए तो जो

आदमी यह कहता था कि मैं रात के वक्त जिसे देख लूँ, दिन में उसे आसानी से पहचान लेता हूँ, उस आदमी ने बादशाह से कहा, ''बादशाह सलामत, अब आप दाढ़ी हिला दें। हम सच्चे दिल से इकरार करते हैं कि हम सारी जिदंगी आपके सेवक बनकर रहेंगे, अब हम चोरी नहीं करेंगे।'' बादशाह को तरस आ गया, बादशाह ने कहा कि इन्हें माफ कर दो।

जिस तरह वह बादशाह भेष बदलकर घूम रहा था उसने फाँसी चढ़ते हुए चोरों को बचाया। उसी तरह परमात्मा अपना देश छोड़ता है, हमारी खातिर मल–मूत्र का चोला धारण करता है और हमारे जैसा ही बनता है। परमात्मा ने गुरु के अंदर सारे गुण रखे होते हैं वह जिसकी हामी भर दे वे काल की फाँसी से बच जाते हैं लेकिन अपनी तरह के इंसान पर भरोसा करना बहुत मुश्किल होता है। जो भरोसा कर लेते हैं उन्हें पता है कि जो भेष बदलकर फिर रहा है वह हमेशा हमारे साथ है। गुरु नानक देव जी महाराज इसे और भी साफ करते हैंः

कोट अपराधी संत संग उदरै, जम ताके नेड़ न आवै।

कबीर साहब कहते हैंः

कबीर घाणी पीड़ते सतगुर लीए छड़ाइ।
परा पूरबली भावनी परगट होई आइ।।

सतसंगी को हमेशा प्यार, भरोसा और श्रद्धा लेकर चलना चाहिए। सेवक जब अभ्यास में बैठता है या चलता–फिरता है तब भी विश्वास, प्यार, और भरोसा ये तीनों चीजें उसके पास होनी चाहिए।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

एक संदेश

जनवरी 1982 मुम्बई

महाराज सावन सिंह जी ने बाबा सोमनाथ जी से मेरी छोटी–सी मुलाकात करवाई थी। मुझे बाबा बिशनदास जी से 'दो–शब्द' का भेद मिला हुआ था। बाबा बिशनदास जी ने महाराज सावन सिंह जी के पास ज़िक्र किया कि मेरे इस सेवक ने काफ़ी खोज की है, धुनियाँ वगैरह तपाई हैं। तब महाराज सावन सिंह जी ने कहा कि हमारा भी एक सेवक है जिसने ये सारे कर्म किए हैं तब उन्होंने बाबा सोमनाथ को बुलाया।

उस दिन मुझे यह पता नहीं था कि बाबा सोमनाथ संगत बनाएंगे या परमगति को प्राप्त होंगे, न मेरे दिल में यह ख्याल था कि मैं कोई संगत बनाऊंगा या इनकी संगत के पास जाऊँगा। हम एक सतपुरुष की सोहबत में बैठे थे, यह सच है कि खरबूज़े को देखकर खरबूज़ा रंग बदलता है।

सन्त चाहें तो चोर को भी नेता बना देते हैं लेकिन शर्त यह है कि इंसान सच बोले। झूठ बोलने जितना कोई पाप नहीं। मुसलमानों की हिस्ट्री में आता है कि एक चोर सारी रात सन्त की घोड़ी खोलने में लगा रहा। सन्त ने पूछा कि तू कौन है? उसने कहा, ''मैं चोर हूँ सारी रात मेहनत की लेकिन कुछ नहीं मिला। मैं इस घोड़ी को आगे से खोलता हूँ तो पीछे से बंध जाती है पीछे से खोलता हूँ तो आगे से बंध जाती है।'' सन्त ने कहा कि मैं तुझे यह घोड़ी दे देता हूँ। सन्त ने चोर के सच बोलने की कद्र की। एक सन्त के लिए सच बोलने वाले को रूहानियत दे देनी कोई बड़ी बात नहीं।

मैं जब बाबा सोमनाथ की संगत से मिलता हूँ तो बहुत खुश होता हूँ। बाबा सोमनाथ की संगत के प्यार ने ही मुझे यहां खींचा है। पश्चिम

के प्रेमियों ने अपने काफी अनुभव बताए कि हमें अंदर से बाबा सोमनाथ का हुक्म है कि हम आपके पास जाएं। ग्राहम और क्रिस ने मुझसे इजाजत माँगी कि क्या मैं हिन्दुस्तान में बाबा सोमनाथ के सेवकों को जानकारी दे सकता हूँ? मैंने कहा कि बड़ी खुशी से दे सकते हो। सूरज का काम तो तपिश देना है। सन्तों के पास किसी का भी नामलेवा आए, नाम तो एक ही है, रास्ता तो एक ही है। सन्त तो हर एक को देना ही जानते हैं और वे देने के लिए ही संसार में आते हैं लेकिन सवाल तो अपने बर्तन का है।

महाराज कृपाल कहा करते थे कि देने वाले का क्या कसूर है, सवाल तो लेने वाले का है। वे पच्चीस साल यही कहते रहे, ''भाई, सन्त देने के लिए ही आते हैं पर आगे लेने वाला भी कोई तैयार हो।'' यह सच है कि सन्त को अपनी ज़िंदगी में उत्तराधिकारी चुनने के लिए बहुत मुश्किल होती है सोचकर देखें, मैले लोगों के साथ संगत को कैसे लगाकर जाएँ?

जो डुबंदो आपि सो तराए किन्न खे।।

जो खुद डूबे हैं वे किसी को कैसे तारेंगे? जिस तरह शिष्य को पूरा गुरु मिलना मुश्किल है उसी तरह गुरु को भी पूरा शिष्य मिलना मुश्किल है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि शिष्य भी भाग्य से मिलता है। पूरा शिष्य ही लोगों को गुरु की पहचान करवा सकता है कि भाई, मेरा तजुर्बा है, ये कुलमालिक हैं। अगर कोई उस गुरु को न पहचाने, प्रकट ही न करे तो दुनिया को पूर्ण सन्त का पता कैसे लगेगा?

जब महाराज कृपाल ने मुझे भजन पर बिठाया तो उन्होंने कहा, ''मैं खुद तेरे पास आऊँगा।'' जब भजन में बैठे हुए तीन दिन हो गए उस समय मेरे पास जो सेवादार रहता था उसके दिल में यह था कि अब ये नहीं बचेंगे। जब हुजूर आए तो उस सेवादार ने कहा, ''गुफा की कुछ सीढियां टेढ़ी–मेढ़ी हैं, आप वहां कैसे जाएंगे?'' हुजूर ने कहा, ''जहां अजायब जा सकता है वहाँ मैं भी जा सकता हूँ।'' उस समय हुजूर ने यह बोला:

चलो सईयो रण देखन चलिए, जित्थे आशिक सूली चढ़दे।
चढ़दे-चढ़दे करन कलोला, मौतों मूल नहीं डरदे।।

कहने का भाव वह जगह देखने चलें, जहां आशिक जीते जी सूली पर चढ़ते हैं। भजन करते समय जब हर एक चक्र टूटता है, हमारी आत्मा जब छह चक्रों को क्रॉस करती है तब ऐसे लगता है जैसे सच में मौत होने लगी है। हृदय चक्र के समय तो दिल को बहुत ही ज़्यादा वेदना होती है, इंसान यही महसूस करता है कि मैं सच में मर रहा हूँ। इस डर के मारे ही अभ्यास नहीं करता और कहता है कि ओ हो! मैं मर ही ना जाऊं।

दिल कमजोर फँसे विच दुनिया, रीस आशकां करदे।
गल्ली भालन मज़ा प्रेम दा, पैर पिछाँ नूं धरदे।।

वे सिर्फ बातों से ही गुरु बनकर बैठते हैं। सब कहते हैं कि हम पूरे हैं, कोई अपने आपको कम नहीं कहलवाता। मैं कहा करता हूँ किसी सन्त को परखना हो तो उसका बैक्ग्राउंड देखें, क्या उसने ज़िंदगी में कोई अभ्यास किया है, कोई तप किया है, कोई खोज की है?

आप महाराज सावन सिंह की हिस्ट्री पढ़ें, वे बाईस साल खोजते रहे। जब बाबा जयमल सिंह जी मिले तो उन्होंने कठिन तपस्या की, कई-कई रातें अंदर से नहीं निकलते थे। महाराज कृपाल सिंह जी को जब नींद आती तो वे रावी नदी के पानी में खड़े होकर भजन-अभ्यास करते।

गुरु के बिना नाम नहीं मिलता और करनी के बिना नाम को प्रकट नहीं कर सकते। ये दोनों चीजें बराबर चलती हैं। गुरु बताते हैं कि मेहनत करें, मेहनती आदमी दुनिया के कामों में भी कामयाब होता है और रुहानियत में भी कामयाब होता है। अगर कोई यह कहे कि मेरा सोए हुए का पर्दा खुल जाए तो यह बात ग़लत है। सोए हुए का पर्दा नहीं खुलता। पर्दा मेहनत करने से खुलता है। मन के साथ संघर्ष करना पड़ता है, हमारा मन हठीला दुश्मन है।

मैं बताया करता हूँ कि मैं जब आर्मी में था। उस समय दूसरी वर्ल्ड वार लगी हुई थी। उस समय लोगों ने तीस–तीस साल की सजा मंजूर कर ली लेकिन लड़ाई में जाकर खुश नहीं थे क्योंकि जो सुबह लड़ाई में जाता शाम को मर जाता था। मैं नाभा जेल में कैदियों को कहने के लिए गया कि जिसने फ़ौज में जाना है उसकी सजा माफ हो जाएगी। कैदी रो पड़े और कहने लगे कि कैद अच्छी है, हमने आर्मी में नहीं जाना।

मेरी लड़ाई में जाने की बारी नहीं थी, मेरी उम्र छोटी थी लेकिन मैंने खुशी से अपना नाम दे दिया। आर्मी में हमारी डॉक्टरी जाँच हुई। डॉक्टर ने कमांडर से सिफारिश करने के लिए कहा, ''भाई, किस–किस के लिए दूध की खुराक लगानी है?'' जो कमजोर थे या छोटी उम्र के थे उनके लिए दूध की खुराक लगाते थे। हमारा कमांडर रोकर कहने लगा, ''मैं किसका नाम लूँ, सबका दूध लगा दें, सब बलि के बकरे हैं।''

आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि उस समय लोगों के मनोबल कितने गिरे हुए थे। मैंने इतना हौंसला दिखाया कि लड़ाई में जाने के लिए अपना नाम लिखवाया लेकिन जब मैं अभ्यास करने बैठा तो मुझे पता लगा कि लड़ाई में जाने के लिए नाम लिखवाना कितना आसान था लेकिन अभ्यास करना कितना मुश्किल है। अभ्यास करते समय मन शेर की तरह आगे खड़ा हो जाता और कहता, ''बैठने नहीं देना।'' कबीर साहब कहते हैं कि कोई सूरमा बहादुर ही भक्ति कर सकता है।

भक्ति करे कोई सूरमा।

बाबा सोमनाथ जी ने बहुत खोज की, अपने गुरुदेव के पास जाकर समय खराब नहीं किया। हमें खुशी है कि वे हर साल संगत के दर्शन करने का मौका दे देते हैं। हमने बाबा जी के बताए हुए मार्गदर्शन पर चलना है, उन पर प्यार और भरोसा बनाकर रखना है क्योंकि गुरुदेव चोला बदल जाते हैं लेकिन मरते नहीं, वे जन्म–मरण से ऊपर हैं।

मैं आमतौर पर सतसंग में कहा करता हूँ और यह मैगजीन में भी छप चुका है कि जो लोग यह कहते हैं कि गुरु मर गए हैं उन्हें कोर्ट में खड़ा करें कि भाई आपने मरने वाला गुरु क्यों धारण किया? जो गुरु खुद जन्म–मरण में लगा हुआ है वह आपका क्या भला करेगा। गुरु मरता नहीं इसलिए हमें उन्हें हमेशा ही हाज़िर–नाज़िर समझकर 'शब्द–नाम' की कमाई करनी है। गुरु अंदर बैठे हैं, भरोसे के बिना पर्दा नहीं खोलते।

जो लोग गुरु के जाने के बाद ग़लत काम करने लग जाते हैं, अपने आप संगत में कुछ बनकर बैठ जाते हैं, वे इससे ज़्यादा अपने साथ क्या जुल्म कर सकते हैं। गुरु नानक देव जी ने कहा था:

चूहा खड्ड न मावई तिकलि बंन्है छज।

चूहा बिल में खुद नहीं जा सकता और अपने पीछे संगत का भार उठा लेता है।

आत्मघाती महापापी।

किसी की आत्मा के साथ खिलवाड़ करना कितना बड़ा गुनाह है, कितना जुल्म है।

प्रथमे मनु परबोधै अपना पाछै अवर रीझावै।

मेरे सतगुरु कृपाल मुझे अपने जीवन काल में नामदान की अनुमति देकर गए हैं। उन्होंने पास बैठकर प्रेमियों को मुझसे नामदान भी दिलवाया। वे आदमी अभी मौजूद हैं जिन्हें मैंने महाराज कृपाल के जीवन काल में नामदान दिया, सच को किसी प्रमाण की जरूरत नहीं। ऐसे भी लोग हैं जो गुरु के जाने के बाद खुद गुरु बनकर बैठ जाते हैं और कहते हैं कि वे हमें कहकर गए थे। आप सोचकर देखें, उनकी क्या हालत होगी।

गुरु हरगोबिन्द सिंह जी महाराज संगत के साथ जा रहे थे, एक जिंदा अजगर साँप को चीटियाँ खा रही थी। यह देखकर संगत ने पूछा ''महाराज जी, इस जिंदा साँप को चीटियाँ खा रही हैं, इसका क्या कारण है?''

उन्होंने हंसकर कहा, ''यह किसी के साथ धोखा करने का नतीज़ा है। यह अपने आपको गुरु कहलवाता था और ये बेचारे भोले–भाले लोग इसके पीछे लगे हुए थे। अब वह भी सुखी नहीं, चेले भी सुखी नहीं और इस गंदगी में बैठे हैं।''

इसलिए हमें कमाई करनी चाहिए, वही शिष्य अच्छा है जो सतगुरु के जीवन काल में अपनी आत्मा को मन इंद्रियों के घाट से ऊपर लाकर गुरु को प्रकट कर ले। उस शिष्य से गुरु भी बेफिक्र हो जाते हैं कि एक तो बना। गुरु की कोशिश होती है कि मैं अपने जीवन काल में हर एक के अंदर शब्द प्रकट कर दूँ। जैसे एक टीचर कहता है कि मैं सबको पास करवा दूँ, टीचर नहीं चाहता कि यह फेल हो जाए।

पूणे में आर्मी का बड़ा स्कूल है, मैं वहाँ सिग्नेलर का कोर्स करने गया। अंग्रेज टीचर था, मेरे अच्छे नम्बर आए। सामने हमारा अफसर रिमार्क दे रहा था, मेरा उस्ताद देख रहा था। वे मेरे पीछे आ गए कि जब इसका नाम बोलेंगे, मैं इसे खड़ा कर दूंगा। जब मेरा नाम बोला गया तब मेरे उस्ताद ने मेरी बगलों में हाथ डालकर मुझे कुर्सी पर खड़ा कर दिया कि यह अजायब सिंह है। कहने का भाव अगर दुनियावी उस्ताद को इतनी खुशी होती है तो जो रूहानियत के बादशाह हैं अगर उनका सेवक पास हो जाता है तो उनको कितनी खुशी होती है। वे भी अपने बच्चे को गले लगा लेते हैं, प्यार से छाती के साथ लगा लेते हैं।

हमें कमाई करनी चाहिए, भरोसा रखना चाहिए और उन महापुरुषों का धन्यवादी होना चाहिए जिन्होंने हमारी खातिर मल–मूत्र का चोला धारण करके हमें 'शब्द–नाम' का रास्ता बताया। तपती हुई दुनिया में हमारी आत्मा को शीतल करने आए। हम आप सबके धन्यवादी हैं, आपने अपना कीमती वक्त निकाला।

***

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

वेश

मियामी, फ्लोरिडा

25 जून 1980 | गुरु अमरदेव जी की बानी | DVD - 501 (2)

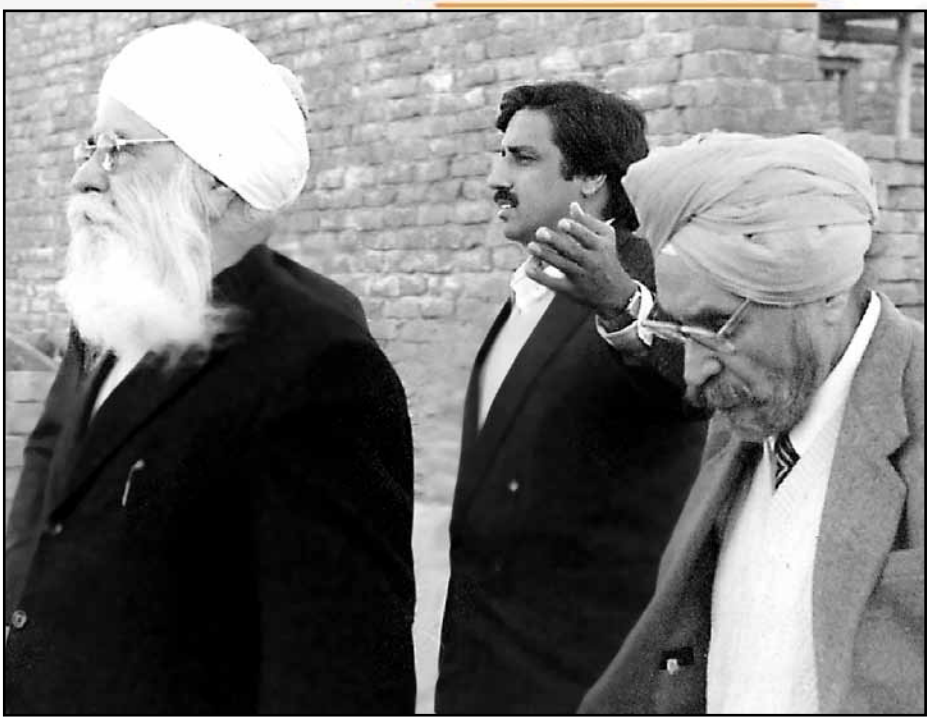

बहु भेख करि भरमाईऐ मनि हिरदै कपटु कमाइ।।

इंसान सृष्टि की सबसे उत्तम रचना है, यह परमात्मा के रहने के लिए उसका मंदिर है इसे नर नारायणी देह कहते हैं लेकिन यह बेचारा अपने घर, अपनी असल को भूलकर बाहरमुखी हुआ घूम रहा है। जो भी रचना रची गई है वह सब इस इंसान के अंदर है। जैसे–जैसे इंसान अंतर्मुखी होता जाता है उस रचना को बड़े अच्छे तरीक़े से देखता है, उतना ही यह परमात्मा के साथ एकसुर होता जाता है।

जिस तरह रेडियो की सुई जब रेडियो स्टेशन के साथ सही लग जाती है तो हम बहुत साफ़ खबर सुन लेते हैं। उसी तरह हमारा रेडियो स्टेशन, हमारा घर सच्चखण्ड है। जब हम एकाग्र हो जाते हैं, सिमरन के ज़रिए हमारी सुरत शब्द के साथ जुड़ जाती है। हम भी अपने घर की खबरें आसानी से सुन सकते हैं, उस परमात्मा की आवाज़ को साफ़ सुन सकते हैं।

यह बानी गुरु अमरदेव जी महाराज की है। आप बहुत प्यार से समझाते हैं, ''हम उस परमात्मा को किसी खास किस्म के कपड़े पहनकर, घर–बार, बच्चे छोड़कर या किसी खास समाज में दाखिल होकर नहीं मिल सकते।'' गुरु गोबिंद सिंह जी के पास बहुत से सिखों ने विनती की कि शायद भगवे कपड़े पहनने वाले ही परमात्मा से मिल सकते हैं। हिन्दुस्तान में आम रिवाज है कि कोई भगवे कपड़े तो कोई नीले कपड़े पहनता है तो उसके दिल में यही होता है कि शायद किसी खास किस्म के **वेश** धारण करने से हम परमात्मा से मिल सकते हैं।

गुरु गोबिंद सिंह जी ने सिखों को समझाने के लिये चुपके से एक गधे के ऊपर शेर की खाल डलवा दी और किसी को खबर नहीं दी, केवल एक–दो मुखिया आदमियों को बताया जिनसे यह कौतुक करवाया था। उस गधे को अपने किले से बाहर निकलवा दिया। सुबह जो भी व्यक्ति बाहर जाता वह भागकर वापिस आ जाता। सभी लोग आकर गुरु गोबिंद सिंह जी से शिकायत करते कि महाराज जी, बाहर तो शेर घूम रहा है। गुरु साहब को तो पता था कि इन्हें समझाना ही है इसलिए वे चुप रहे।

जब दो–तीन दिन कोई भी किले से बाहर नहीं निकला, गुरु साहब ने देख लिया कि ये वास्तव में ही बहुत दहशत खा चुके हैं तो गुरु गोबिंद सिंह जी ने एक दो सिखों को साथ लेकर किले की तरफ का रास्ता खाली छोड़ दिया और दूसरी तरफ से घेराबंदी की तो गधा डरते हुए जिधर से रास्ता मिला किले की तरफ दौड़ा। सामने कुम्हार अपने कुछ गधों के साथ

आ रहा था। उन गधों को देखकर वह हिंगा। कुम्हार ने सोचा कि यह तो गधा है, कुम्हार ने गधे के ऊपर से शेर की खाल उतारकर फैंक दी और उसके ऊपर अपना सामान लाद लिया।

जब लोगों को यह पता लगा कि वह तो गधा था, किसी ने उसके ऊपर शेर की खाल डाल रखी थी और हम ऐसे ही डर रहे थे, उसे सच में ही शेर समझ रहे थे तो वे लोग शर्मिंदा हुए। गुरु गोबिंद सिंह जी ने उनसे कहा, ''भाई, हमने आपको समझाने के लिए ही ये कौतुक रचा था अगर गधे के ऊपर शेर की खाल पहना दें तो वह शेर नहीं बन जाता। उसी तरह किसी खास किस्म के भगवे कपड़े या नीले कपड़े पहन लेने से अगर हम सोचें कि हमारे मन को शांति आ जाएगी या हमें परमात्मा मिल जाएगा तो हमारा यह ख्याल ग़लत है। गुरु गोबिंद सिंह जी कहते हैं:

भेख दिखाइ जगत को लोगन को बसि कीन।
अंति काल काती कटिओ बासु नरक मो लीन।।

गुरु अमरदेव जी कहते हैं कि **वेश** धारियों में शांति नहीं, वेश भ्रम है क्योंकि परमात्मा तो हमारे अंदर है। बाबा जल्लण कहते हैं:

लोक डरावण कारणे तू भेख बनाया।
निर उधम टुकड़ा खामणा बाबा नाम धराया।।

कपड़े रंग लेने से या समाज तब्दील कर लेने से परमात्मा मिलता हो तो इससे सस्ता सौदा और क्या हो सकता है? सन्त जब भी इस संसार मण्डल में आते हैं तो हमें प्यार से यही समझाते हैं कि आप अपने समाज, धर्म में रहें और गृहस्थ में रहते हुए गृहस्थी जीवन की जिम्मेदारियाँ पूरी करते हुए 'शब्द–नाम' की कमाई करें। परमात्मा हमारे अंदर हैं हम उसकी खोज बाहर करेंगे तो कैसे कामयाब हो सकते हैं? गुरु साहब कहते हैं:

सभ किछु घर महि बाहरि नाही, बाहरि टोलै सो भरमि भुलाही।

हरि का महलु न पावई मरि विसटा माहि समाइ।।
मन रे गृह ही माहि उदासु ।।

अब गुरु साहब कहते हैं कि **वेश** धारण करने से परमात्मा नहीं मिलता क्योंकि परमात्मा तो अंदर हैं। वेश धारी एक–दूसरे से कपट करते हैं, एक दूसरे को देखकर खुश नहीं होते। एक पंथ दूसरे को देखकर घृणा करता है, ईर्ष्या करता है। हिन्दुस्तान के हरिद्वार में कुंभ बारह साल बाद आता है, वहाँ सारे **वेश** धारी साधु इकट्ठे होते हैं। वे केवल स्नान करने के लिए एक दूसरे से लड़ते–झगड़ते हैं।

उदासी, निर्मले, सन्यासी और नागे सब कहते हैं कि स्नान करने की पहले हमारी बारी है। **वेश** धारियों के अंदर इतनी घृणा होती है कि ईसाई, मंदिर में जाकर गॉड–गॉड नहीं कर सकते। हिन्दू गिरजाघर में जाकर राम–राम नहीं कर सकते। मुसलमान गुरुद्वारे में जाकर बाँग नहीं दे सकते और सिख मस्जिद में जाकर सत श्री अकाल नहीं कह सकते।

सन्त–सतगुरु जब संसार में आते हैं, वे सारे समाजों को इकट्ठा करके समझाते हैं कि गॉड, राम, वाहेगुरु और कलमा उसी ताकत का नाम है। वे सबको इकट्ठा करके उस ताकत के साथ जोड़ते हैं। गुरु साहब कहते हैं:

खत्री ब्राहमण सूद वैस उपदेसु चहु वरना कउ साझा।
गुरमुखि नामु जपै उधरै सो कलि महि घटि घटि नानक माझा।।

चार वर्णों में सारा संसार आ जाता है। हमारा उपदेश चारों वर्णों, कुल आलम के लिए एक ही है। वह उपदेश है कि गुरमुखों के पास 'नाम' है, वह नाम सबके शरीर, देह और वजूद के अंदर है। महात्मा उस नाम के साथ जोड़ने के लिए आते हैं। जब हमारे पूर्वले अच्छे कर्म जाग जाते हैं तब हमारा मिलाप महात्मा के साथ हो जाता है। गुरु साहब कहते हैं:

पूरब करम अंकुर जब प्रगटे भेटिओ पुरखु रसिक बैरागी।
मिटिओ अंधेरु मिलत हरि नानक जनम जनम की सोई जागी।।

महात्मा हमें कायर या बुझदिल नहीं बनाते। वे कहते हैं कि आप अपने समाज में रहे, गृहस्थ की ज़िम्मेदारियाँ पूरी करते हुए परमात्मा की भक्ति करें, परमात्मा से मिलें। गुरु साहब कहते हैं:

कहु नानक गुरु पूरा भेटिआ परवाणु गिरसत उदास।

सवाल सिर्फ मन को समझाने का है। चाहे आप इस मन को घर बैठकर समझा लें, चाहे जंगलों–पहाड़ों में जाकर समझा लें। घर बैठकर मन को समझाना आसान है क्योंकि हम अपनी जरूरतों को दस नाखूनों की कमाई रोजी–रोटी से पूरा कर लेते हैं लेकिन जब हम घर छोड़कर चले जाते हैं तो वहाँ भी मकान, बिस्तर, रोटी हर किस्म की ज़रूरतें होती हैं और इन ज़रूरतों को पूरा करने के लिए फिर गृहस्थियों के घरों में जाकर माँगना पड़ता है। अगर त्यागी आदमी थोड़ा बहुत भजन–अभ्यास करता भी है तो गृहस्थी लोग सेवा करके उससे छीन लेते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

गिरही का टुकर भला नो नो ऊँगल दाँत।
भजन करे ता उबरे नहीं ताँ केड्डे आँत।।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे अगर हम गृहस्थ में रहते हुए एक घंटा भजन करते हैं और साधु पाँच घंटे भजन करता है तब जाकर उनका देना पूरा करेगा। अगर कोई किसी का खाएगा तो उसे वह ज़रूर देना पड़ेगा चाहे भजन में से दे चाहे वैसे दे। गुरु नानक साहब कहते हैं:

लये दित्ते बिन रहे ना कोई।

सन्त तो यहाँ तक कहते हैं कि अगर कोई अनजाने में भी किसी का खाएगा तो उसका भी हिसाब–किताब देना होगा। गुरु साहब यही नसीहत करते हैं कि सबसे ज्यादा ऊंची और अच्छी मत 'शब्द–नाम' की कमाई करके अपने जीवन को सफल बनाना है।

***

दाता जी कित्थे गयों

दाता जी कित्थे गयों, प्रीतमा वे, कित्थे गयों x 2

1 हत्थीं अपणी बाग सजा के, आपे तूं ऐह बूटे ला के, x 2
नहीं सी छड जांणा सानूं, मालिया वे, कित्थे गयों.....

2 पता जे हुंदा नाल ही जांदे, काहनूं ऐडे दुखड़े उठांदे, x 2
जे चिर लौणां सी, रखवालिया वे, कित्थे गयों.....

3 हुण तां डोले जग दा बेड़ा, बन्ने लावे होर हुण केहड़ा, x 2
तेरे बाजों कौंण बचावे, खुशहालिया वे, कित्थे गयों.....

4 सुण फरियाद 'अजायब' दी आंवीं, आ के दुखियां दा दर्द मिटावीं, x 2
सोहणा आ के दर्श दिखा जा, संगत देया वालिया वे, कित्थे गयों.....

RNI No - RAJHIN/2003/9899

जब हम सारे सहारे छोड़कर परमात्मा को पुकारते हैं तो परमात्मा से भी नहीं रहा जाता, वह जरूर हमारी मदद करता है हमें अपने पास बुलाता है।